http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 1, 9-10

Article ID: 421

ग्रीष्मकालीन मूंग की वैज्ञानिक खेती

डॉ. दिव्या महतो, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. खुशबू चंद्रा और डॉ. नेहा रानी

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, बिहार

परिचय

ग्रीष्मकालीन मूंगएक महत्वपूर्ण अल्पकालीन दलहनी फसल है जो उच्च पोषण मूल्य प्रदान करती है और जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण के माध्यम से मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाती है। बुवाई का उचित समय, पोषक प्रबंधन, खरपतवार नियंत्रण और समेकित कीट प्रबंधन जैसी उन्नत कृषि पद्धतियाँ उपज को अधिकतम करने के लिए आवश्यक हैं। यह लेख बिहार के किसानों के लिए एक विस्तृत वैज्ञानिक मार्गदर्शिका प्रस्तुत करता है, जिसमें उन्नत किस्में, रोग प्रतिरोधक क्षमता, खरपतवारनाशी अनुशंसाएँ और समेकित फसल प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया गया है।

मिट्टी और जलवायु आवश्यकताएँ

मिट्टी का प्रकार : अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट से दोमट मिट्टी (Ph 6.5.7.5) उपयुक्त है। खराब जल निकासी वाली मिट्टी जड़ सड़न को बढ़ावा देती है। तापमान 25-35°पर इष्टतम वृद्धि होती है। फूल आने के समय 40°ब्से अधिक तापमान से फलियों का निर्माण प्रभावित होता है। वर्षा: 60-75सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। अधिक वर्षा होने पर जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।

रोग प्रतिरोधक क्षमता वाली उन्नत किस्में एवं पकने की अवधि

किस्म	पकने की अवधि	रोग प्रतिरोधकता / सहनशीलता	मुख्य विशेषताए
विराट	60–65 दिन	पीला मोज़ेक वायरस (YMV)प्रतिरोधी	उच्च उपज (12–15) क्विंटल / हेक्टेयर), सूखा सहनशील
शिखा	65–70 दिन	चूर्णिल आसिता सहनशील	देर से बुवाई के लिए उपयुक्त, मोटे दाने
आईपीएम 2–3	60–65 दिन (अल्पकालीन)	YMV, पाउडरी मिल्ड्यू	15–18 क्विंटल / हेक्टेयर
वर्षा	70–75 दिन (मध्यम अवधि)	YMV, रूट रॉट, एन्थ्रेक्नोज	12–15 क्विंटल / हेक्टेयर

बीज दर, बुवाई का समय और पंक्ति अंतराल'

बुवाई का समय10-20 मार्च'' (शीघ्र बुवाई से ग्रीष्मकालीन तनाव से बचाव)।

बीज दर 20-25 किग्रा/हेक्टेयर'' (बीज को 'थाइरम' या 'कार्बेन्डाजिम' / 2 ग्राम/किग्रा से उपचारित करें)।

पंक्ति अंतराल 30 सेमी (पंक्ति से पंक्ति) × 10 सेमी (पौधे से पौधे)।

4. पोषक तत्व प्रबंधन

आधार उर्वरक (प्रति हेक्टेयर)

नाइट्रोजन 20 किग्रा (प्रारंभिक अवस्था के लिए)

फॉस्फोरस 40 किग्रा

पोटाश (20 किग्रा

जैव उर्वरक राइजोबियम' + PSB / 5 किग्रा/हेक्टेयर (नाइट्रोजन स्थिरीकरण हेतु)।

पर्णीय छिड़काव (फूल आने पर)

NPK 19:19:19 @0-5%Z nSO_4 (फलियों के विकास हेतु)।

5. खरपतवार प्रबंधन एवं खरपतवारनाशी अनुशंसाएँ

खरपतवार प्रकार	खरपतवार प्रकार अनुशंसित खरपतवारनाशी	मात्रा (प्रति हेक्टेयर)	छिड़काव का समय
घास प्रकार	पेंडीमेथालिन 30% EC	1-0–1-5 किग्रा सक्रिय तत्व/हे.	बुवाई के तुरंत बाद (0–3 दिन)
चौड़ी पत्ती वाल	इमाज़ेथापायर 10% SL	75–100 ग्राम सक्रिय तत्व/हे	बुवाई के 15–20 दिन बाद
सज्जी प्रकार	पायरोक्सासल्फोन 85% WG	100–125 ग्राम सक्रिय तत्व/हे	बुवाई के तुरंत बाद द्य
मिश्रित खरपतवार	क्विज़ालोफॉप–इथाइल 5% E	50–75 ग्राम सक्रिय तत्व/हे	बुवाई के 20 दिन बाद

'यांत्रिक निराई:

पहली निराई 15-20 दिन बाद (हाथ से या होईंग)

दूसरी निराइ' 35-40 दिन बाद (आवश्यकतानुसार)

6. प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

कीट	क्षति के लक्षण	प्रबंधन रणनीति
सफेद मक्खी	पीला मोज़ेक वायरस फैलाती है	इमिडाक्लोप्रिड' (0.5 मिली/लीटर) या पीले चिपचिपे ट्रैप
थ्रिप्स	फूल झड़ना, वृद्धि रुकना	थायमेथोक्साम' बीजोपचार + नीम तेल छिड़काव
फली छेदक	फलियों में छेद	क्लोरान्ट्रानिलिप्रोल' (0.3 मिली/लीटर)
माह	रस चूसना, विषाणु फैलाना	डाइमेथोएट (2 मिली/लीटर) या नीम आधारित कीटनाशक

7. रोग प्रबंधन

रोग	कारक जीव	लक्षण	नियंत्रण उपाय
पीला मोज़ेक वायरस	बेगोमोवायरस (सफेद मक्खी द्वारा)	पीली पत्तियाँ, ठिगने पौधे, कोई फलियाँ नहीं	प्रतिरोधी किस्में, नीम तेल छिड़काव
चूर्णिल आसिता	इरिसाइफी पॉलीगोनी	पत्तियों पर सफेद पाउडर जैसे धब्बे	'गंधक' (2 ग्राम/लीटर) 15 दिन के अंतराल
पर्ण धब्बा रोग	सेरकोस्पोरा कैनेसेंस	भूरे धब्बे, पीला घेरा	मैन्कोज़ेब' (2 ग्राम/लीटर) छिड़काव
जड़ सड़न	इजोक्टोनिया सोलानी'	पौधे मुरझाना, काली जड़ें	कार्बेन्डाजिम' से बीजोपचार

8. कटाई एवं कटाई उपरांत प्रबंधन

पहली तुड़ाई 50: फलियाँ काली होने पर (फटने से बचाव)।

दूसरी तुड़ाई 7-10 दिन बाद शेष फलियों के लिए।

उपज क्षमता10-15 क्विंटल/हेक्टेयर' (अनुकूल परिस्थितियों में)।

भंडारण बीजों को 8-10% तक सुखाकर नीम की पत्तियों के साथ वायुरोधी बर्तन में रखें।

9. सरकारी सहायतारू बिहार बीज अनुदान योजना

अनुदान प्रमाणित बीज पर 80% (अधिकतम ₹117.20/किग्रा)।

पात्र किस्में विराट शिखा आईपीएम 2-3 वर्षा

आवेदन बिहार राज्य बीज निगम या कृषि विज्ञान केंद्र (ज़टज्ञ) के माध्यम से।

निष्कर्ष

वैज्ञानिक खेती पद्धतियाँ, जैसे ''समय पर बुवाई, संतुलित उर्वरक प्रयोग, समेकित कीट प्रबंधन प्ड्ड और खरपतवारनाशी का उपयोग, मूंग की उत्पादकता को काफी बढ़ा सकते हैं। बिहार के किसानों को ''रोग प्रतिरोधी किस्मों'' और ''सरकारी अनुदान'' का लाभ उठाकर लाभ को अधिकतम करना चाहिए। शोधकर्ताओं, विस्तार कार्यकर्ताओं और किसानों के सहयोग से क्षेत्र में दलहन उत्पादन को स्थायी रूप से बढ़ाया जा सकता है।